सांगीतिक सृजनधर्मिता और रचनाकार

डॉ. प्रीतेश आचार्य

पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने शिष्यों को गायन के शीलयुक्त सुसभ्य पवित्र पक्ष को बरकरार रखने के लिए परिशोधन एवं नवीन संयोजन की ओर शिष्यों को प्रेरित किया, और अच्छे–अच्छे कवियों के पदों को भी शास्त्रीय रचना में सम्मिलित किया। पलुस्कर जी ने पद दोष से युक्त बंदिशों के पुनरोद्धार के द्वारा बंदिशों की शुद्धता महत्ता पर ध्यान दिलाया, क्योंकि बंदिशों की चोरी के भय से प्रायः गायक अस्पष्ट उच्चारण किया करते थे, जिससे बंदिशों के भावार्थ का स्पष्ट रुप से समझ पाना सम्भव नहीं हो पाता था। पलुस्कर जी के सुयोग शिष्य प्रणवरंग जी को गुरु परंपरा से प्राप्त यह सद्वृत्ति इतनी क्षमता सम्पन्न कर गयी की उन्होनें हिन्दी साहित्य के वैश्विक महाकाव्य कामायनी का संगीत रूपक अपने स्वर संयोजन में साभिनय प्रस्तुत कराया और कामना का भी स्वर संयोजन करते हुए ओपेरा को शास्त्रीय संगीत में समन्वित करते हुए प्रस्तुत किया जिससे संगीत के साथ अन्य क्षेत्र के अन्य लोग भी चकित हो गए। प्रणवरंग जी के द्वारा रचना का अक्षय बीज वृहद् वृक्ष बना जहां रचनाकर्म न होकर रचनाधर्म की स्थापना हुयी । तीन पीढ़ियों के अंतर्गत प्रणवरंग जी के शिष्य भावरंग जी ने न केवल रचना की अपितु अपनी अगली पीढ़ी के रचनाकारों को आकार दिया। **प्रभावरंग जी के मतानुसार रचनाधर्मिता के द्वारा अपने को समर्थ करती प्रत्येक पीढ़ी ने मर्यादा के अनुसार परंपरा पर निजी उपलब्धियों एवं सृजनधर्मिता का रंग चढ़ाया।** समकालीन अन्य रचनाकारों ने भी समय की आवश्यकता के अनुरूप श्रेष्ठ एवं सार्थक सोद्देश्य भाव वाले पदों की रचना से रचनाकार के व्यक्तित्व को नया आयाम दिया।